thearyasamaj.org

ओ३म्

ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 89 अंक : 13
वैशाख कृष्ण द्वितीया
विक्रम संवत् 2072
कलि संवत् 5116
5 अप्रैल से 21 अप्रैल, 2015
दयानन्दाब्द : 191
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,116
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुनदेव चड्डा , कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा , जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य , अलवर
श्री जगदीश जी आर्य, बहरोड़
श्री अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक :
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजापार्क, जयपुर ।
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 व 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा
सम्पादक, आर्य मार्तण्ड,
42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास ,
जयपुर ।
मोबाईल – 9314032161
मुद्रक :
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स , जयपुर ।
ग्राफिक्स :
प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamartand

जन–जन की आस्था के आधार मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम की जयन्ती पर आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का सादर नमन ।

इस अंक में अन्दर मिलेगी आपको इस देश से , श्रीराम के जीवन से जुड़े हुए रोचक तथ्य एवं अनेक प्रश्नों का तथ्यपरक प्रमाणसहित समाधान :

- क्या रावण वध विजयदशमी को हुआ था ?
- क्या महर्षि वाल्मिकि डाकू थे ?
- क्या श्रीराम ने सीता–परित्याग किया था ?
- क्या वास्तव में रावण के 10 सिर थे ?
- रामायण की रचना कब ? श्रीराम के जन्म से पूर्व या पश्चात् ?
- रामायण की रचना कितने वर्षों पूर्व हुई ?

तू उस ब्रह्म की उपासना कर , जिस ब्रह्म से जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और जीवन होता है ; जिसके बनाने और धारण से यह सब जगत् विद्यमान हुआ है वा ब्रह्म से सहचरित है; उसको छोड़ दूसरे की उपासना नहीं करनी । – सत्यार्थ प्रकाश

thearyasamaj.org

वेदामृत "देवासुरसंग्राम कथाविषय"

देवासुरा संयता आसन् ।। १ ।।.....

भाषार्थ : जो चौथी देवासुर संग्राम की कथा रूपकालंकार की है, इस को भी बिना जाने प्रमादी लोगों ने बिगाड़ दिया है।

जैसे– एक दैत्यों की सेना थी कि जिनका शुक्राचार्य पुरोहित था, और वे दक्षिण देश में रहते थे। तथा दूसरी देवों की सेना थी कि जिनका राजा इन्द्र, सेनापति अग्नि और पुरोहित बृहस्पति था। उन देवों को विजय कराने के लिये आर्यावर्त के राजा भी जाया करते थे। असुर लोग तप करके ब्रह्मा, विष्णु और महादेवादि से वर मांग लेते थे। और उनके मारने के लिये विष्णु अवतार धारण करके पृथिवी का भार उतारा करते थे।

यह सब पुराणों की गप्पें व्यर्थ जानकर छोड़ देना। और सत्य ग्रन्थों की कथा जो नीचे लिखते हैं, उनका ग्रहण करना सबको उचित है। तद्यथा–

निघण्टु आदि शास्त्रों में सूर्य देव और मेघ असुर करके प्रसिद्ध है। इन सब वचनों का अभिप्राय यह है कि मनुष्य लोग देवासुर संग्राम का स्वरूप यथावत् जान लेवें। जैसे– जो लोग विद्वान्, सत्यमानी, सत्यवादी और सत्यकर्म करने वाले हैं, वे तो "देव" और जो अविद्वान्, झूठ बोलने, झूठ मानने और मिथ्याचार करने वाले हैं, वे "असुर" कहाते हैं। उन का परस्पर नित्य विरोध होना, यही उनके युद्ध के समान है। इसी प्रकार मनुष्य का मन और ज्ञान इन्द्रिय भी देव कहाते हैं, उन में राजा मन और सेना इन्द्रिय हैं तथा सब प्राणों का "असुर" है, उन में राजा प्राण और अपानादि सेना है। इन का भी परस्पर विरोधरूप युद्ध हुआ करता है। मन के विज्ञान बढ़ने से प्राणों का जय और प्राणों के बढ़ने से मन का विजय हो जाता है।।1।।

(सोर्दे0) सु अर्थात् प्रकाश के परमाणुओं से मन और पांच ज्ञानेन्द्रिय, उनके परस्पर संयोग तथा सूर्य आदि को ईश्वर रचता है और (असो0) अन्धकाररूप परमाणुओं से पांच कर्मेन्द्रिय, दश प्राण और पृथिवी आदि को रचता है, जो कि प्रकाशरहित होने से असुर कहाते हैं। प्रकाश और अप्रकाश के विरूद्ध गुण होने से इनकी भी संग्राम संज्ञा मानी है।।2–3।।

तथा पुण्यात्मा मनुष्य 'देव' और पापात्मा दुष्ट लोग "असुर" कहाते हैं । उनका भी परस्पर विरोधरूप युद्ध नित्य होता रहता है। तथा दिन का नाम 'देव' और रात्रि का नाम 'असुर' है । इनका भी परस्पर विरोधरूप युद्ध हो रहा है।

– "ग्रन्थप्रामाण्याप्रामाण्यविषय", **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका**

(यहाँ पर इस कथा के मुख्य अंश संक्षिप्त रूप में प्रकाशित किये गये हैं, साथ ही इसके मुख्य सन्दर्भ के रूप में महर्षि द्वारा मन्त्र और सूक्त अधिक संख्या में प्रस्तुत किये जाने के कारण संस्कृत सूक्त का केवल प्रथम वाक्य ही देकर छोड़ दिया गया है। पाठकगण इस विषय में सम्पूर्ण जानकारी सन्दर्भ में दिए गए ग्रन्थ एवं स्थान से प्राप्त कर लेवें ।)

सम्पादकीय आर्य मार्तण्ड | राजा राम के जीवन से शिक्षा लें आज के शासक

रामराज्य को सामान्य जनमानस आज भी स्मरण क्यों करता है? और महात्मा गांधी ने भारत को स्वतन्त्र होने पर रामराज्य को ही क्यों भारत वर्ष के लिए सर्वथा उपयुक्त माना था? क्योकि रामराज्य में लोग प्रसन्न, सुखी, सन्तुष्ट, पुष्ट, धार्मिक तथा रोग–व्याधियों से मुक्त रहेगे। उन्हे दुर्भिक्ष का भय नहीं होगा–

प्रहृष्टमुदितो लोकस्तुष्टः पुष्ट सुधार्मिकः।
निरामयो ह्यरोगस्थ दुर्भिक्ष भयवर्जितः।। (बा.का. 1.90.)

मानव अपने जीवन को सुख, सन्तुष्ट, परिपुष्ट और रोगों से रहित रखना चाहता है। ऐसा तभी सम्भव है जब राष्ट्र धनैश्वर्य से युक्त हो। शासक पुण्यात्मा, चरित्रवान् और प्रजा हितैषी हो।

इस सन्दर्भ में वाल्मीकि रामायण में एक प्रसंग आता है जिसे वर्तमान शासकों को अवश्य हृदयंगम करना चाहिए। वनवास के समय जब राम ने भरत से शासन को सही रूप में संचालन के कुछ आवश्यक नियमों के विषय में पूछा कि तुम जनता के कल्याण, सुरक्षा और अभिवृद्धि के लिए सदा उद्यम रहते हुए अनर्थकारी दोषों से दूर रहते हो या नहीं? यहाँ शासक के चौदह प्रकार के दोषों की चर्चा करते हुए इन दोषों के परित्याग का उपदेश दिया गया है।

यथा–

नास्तिक्यमनृतं क्रोधं प्रमादं दीर्घसूत्रताम्।
अदर्शनं ज्ञानवतामालस्यं षंचवृत्तिताम्।।
एकचिन्तनमर्थानामनर्थज्ञेश्य मन्त्रणम्।
निश्चितानामनारम्भं मन्त्रस्यापरिरक्षणाम्।।
मंगलाद्यप्रयोगं च प्रत्युत्थानं च सर्वतः।
काश्चेत् त्वं वर्जयस्येतान् रादोषांश्चतुर्दश।। (अयो.काण्ड 100.65–69)

अर्थात् 1. नास्तिकता, 2. असत्यभाषण, 3. क्रोध, 4. प्रमाद 5. दीर्घसूत्रिता 6. ज्ञानी पुरुषों का संग न करना 7. आलस्य, 8. पंच कमैन्द्रियों के वशीभूत होना, 9. राजकायों में एकाकी ही विचार करना, 10. प्रयोजन को न समझने वाले मूर्खों से परामर्श लेना, 11. निश्चित किये हुए कार्यों को शीघ्र प्रारम्भ न करना, 12. गुप्तमन्त्रणा को प्रकट करना, 13. मांगालिक शुभकायों का अनुष्ठान न करना, एवं 14. शत्रुओं पर एक साथ आक्रमण करना। उक्त चतुर्दश दोषों की चर्चा करते हुए राम यह अपेक्षा करते है कि भरत में इनमें से कोई एक भी दोष नहीं होना चाहिए। परन्तु वर्तमान शासकों में अधिकांश दोष देखने को मिलते है, ऐसे में रामराज्य की कल्पना कैसे सम्भव है।

श्रीरामचन्द्र और सीताजी के विवाह के समय महर्षि वशिष्ठ द्वारा श्रीराम की 35 पीढ़ी (वंशावली)और राजा जनक द्वारा उनकी 23 पीढ़ीयों (वंशावली)के नाम बताये गये थे।

thearyasamaj.org

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम, भ्रान्तियाँ और निवारण

भ्रान्ति 1 : रामायण का काल : 9 लाख वर्ष या अधिक :

रामायण का काल पाश्चात्य जगत् में पाँच–छः हजार वर्षों के मध्य तथा भारतीय हिन्दू समाज में 9 लाख वर्ष माना जाता है । परन्तु वास्तविकता में यह काल इससे कहीं अधिक है। वायु पुराण में एक श्लोक आता है –

" त्रेतायुगे चतुर्विंशे रावणस्तपसः क्षयात् ।
रामं दाशरथिं प्राप्य सगणः क्षयमीयवान् ।। 70/48।।"

अर्थात् आचार से पतित होने के कारण रावण चौवीसवें त्रेतायुग में दशरथनन्दन श्रीराम के साथ युद्ध करके बन्धु–बान्धवों सहित मारा गया ।

श्लोक के अनुसार श्रीराम का काल 24वें त्रेतायुग (वैवस्वत् मन्वन्तर) में बताया गया है। इसके अनुसार आज तक का गणित बनता है – 24वें से 28वें त्रेतायुग तक 4 युग हुए तो कुल समय बना $4320000 \times 4 = 1,72,80000$ वर्ष, इसमें 28वें द्वापर के 08,64000 वर्ष और कलियुग के 5116 वर्ष जो बीत चुके हैं, यदि जोड़ दिए जाएं तो कुल वर्ष 01,81,50016 वर्ष होते हैं । इस प्रकार रामायण का काल हुआ 01 करोड़, 81 लाख, 50 हजार, 16 वर्ष । इस सम्बन्ध में एक दूसरा प्रमाण भी है :–

"रामायण के **सुन्दर काण्ड , सर्गः चतुर्थ, श्लोकः** 12 में चार दांत वाले हाथियों का वर्णन मिलता है जो 2.50 करोड़ से 55 लाख वर्ष पूर्व तक अफ्रीका में पाये थे । महर्षि वाल्मीकि का इस विषय में लिखना ये बताता है कि ये रचना उसी काल में हुई और रामायण श्रीराम के समकालीन ग्रन्थ है । इसलिए इसका समय 9 लाख वर्ष से भी अधिक का है।"

भ्रान्ति – 2 : क्या रामायण काल्पनिक ग्रन्थ है :

आजकल पाश्चात्य जगत् के साथ – साथ आधुनिक समझने वाले तथाकथित भारतीय विशेषकर युवा और प्रोफेशनल वर्ग ये मानने में गौरव अनुभव करता है कि रामायण एक काल्पनिक ग्रन्थ है। राम नाम के किसी व्यक्तित्व का अस्तित्व ही नहीं था । परन्तु यह बात पूर्णतया मिथ्या है । इस सम्बन्ध में वाल्मीकि रामायण का अन्तः प्रमाण प्रस्तुत है : किष्किन्धा काण्ड के बीसवें सर्ग में राम सुग्रीव से कहते हैं –

कार्तिके समनुप्राप्ते त्वं रावणवधेयत ।। 20/14।।

अर्थात् हे सुग्रीव ! कार्तिक मास के आरम्भ होने पर तुम रावणवध के लिए प्रयत्नशील होना । और 35 वें सर्ग में अंगद वानरों से कहते हैं

वयमाश्वयुजे मासि कालसंख्याव्यवस्थिताः ।
प्रस्थिताः सोऽपि चातीतः किमतः कार्यमुत्तरम् ।। 35/24।।

देखो! हम लोग आश्विन मास में सीता के अन्वेषण की प्रतिज्ञा करके राजधानी से निकले थे। वह सब समय व्यतीत हो गया है। अब हम लोगों को आगे क्या करना चाहिए ? श्रीराम, सीता अन्वेषण का कार्य कार्तिक मास में आरम्भ करने के लिए कहते हैं जबकि अंगद वह कार्य आश्विन मास में आरम्भ होना बताते हैं । यह परस्पर विरोध कथन प्रतीत होता है , परन्तु यह कथन महर्षि वाल्मीकि के यथार्थ वर्णन का प्रमाण है । श्रीराम उत्तर भारत के निवासी थे और अंगद , दक्षिण भारत के। भारत के दोनों भागों में कृष्ण पक्ष का व्यवहार–भेद है । वो ये कि आश्विन शुक्ल पूर्णिमा का अगला दिन श्रीराम के अनुसार (उत्तर भारतीय होने के कारण) कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा है जबकि दाक्षिणात्य अंगद के लिए आश्विन कृष्ण प्रतिपदा है। तिथि एक ही है। इस यथार्थ का काल्पनिक कथा में निरूपण सम्भव नहीं है। यही रामायण के सत्य काव्य होने का प्रबल प्रमाण हैं ।

भ्रान्ति 3 : क्या रावण के 10 सिर थे ?

यह एक बहुत बड़ा भ्रम है कि रावण के 10 सिर थे। रावण के लिए **'दशानन'** शब्द का प्रयोग होने पर ये मान लिया कि रावण के 10 सिर थे तो क्या उसी प्रकार हम ये भी स्वीकार करेंगे कि 'दशरथ' जी के पास केवल 10 ही रथ थे ?नहीं ! दशरथ जी के पास रथों की संख्या तो कहीं अधिक थी। पुनः दशरथ का अर्थ क्या है ?"**शब्दकल्पद्रुम**" में **'दशरथः'** का अर्थ इस प्रकार है – **"दशसु दिक्षु गतो रथो यस्य"** अर्थात् जिसके रथों की गति दसों दिशाओं में निर्बाध हो। इसी प्रकार "दशानन' का अर्थ होगा – **"दशसु दिक्षु आननं मुखाज्ञा यस्य"** अर्थात् जिसकी ध्वनि दशों दिशाओं में गूजती थी । जिसकी आज्ञा दशों दिशाओं में चलती थी।

भ्रान्ति 4 : क्या श्रीराम ने लंका विजय के पश्चात् सीता–परित्याग किया था ?

यह भी एक भ्रम है कि लंका विजय के पश्चात् एक धोबी के कहने पर सीता जी का परित्याग कर दिया था। यह मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के चरित्र पर लांछन लगाना है। प्रथम तो यह कथा "उत्तरकाण्ड" की है जो कि महर्षि वाल्मीकि की रचना वाल्मिकीय रामायण का अंश नहीं है। अपितु रामचरितमानस आदि का अंश हैं । अतएव यह प्रामाणिक नहीं है। साथ ही श्रीराम जैसा मर्यादापालक, वैदिक धर्मी, विद्वान् व्यक्ति इस प्रकार का आचरण करे यह बुद्धिसंगत भी प्रतीत नहीं होता है। हाँ, सीता जी की अग्निपरीक्षा का वर्णन अवश्य है।

सर्ग 66, श्लोक 13–26 तक में इसी अग्नि परीक्षा का उल्लेख है । उसके अनुसार जब सीताजी, श्रीराम के कटु वचनों से व्यथित होकर अपनी जीवन लीला समाप्त करने के लिए अग्नि में प्रवेश करने को उद्यत हुई तब श्रीराम ने उन्हें रोकते हुए उपस्थित सभी राक्षसों, वानरों के समक्ष कहा कि **"मैं जानता हूँ कि सीता तीनों लोकों में सबसे शुद्ध और पवित्र है, परन्तु कुछ समय अशोक वाटिका में रहने के कारण यदि इन्हें सीधा स्वीकार कर लू तो लोग कामी और मूर्ख कहेंगे। इसलिए ही**

श्रीराम के मित्र वैद्यराज गरूड़ द्वारा राम–लक्ष्मण की नागपाश से मुक्ति एवं चिकित्सा के लिए "स्पर्श–चिकित्सा" विधि का प्रयोग किया गया था, जिसका प्रारम्भिक प्रयोग वर्तमान में "रेकी–चिकित्सा" के रूप में होता है।

thearyasamaj.org

यह अग्निपरीक्षा देनी पड़ी ।'' इसी सर्ग के 26वें श्लोक में श्रीराम कहते हैं कि

''सीता मुझमें ही अनन्यरूप से अनुरागवती है – मुझसे अभिन्न है जैसे प्रभा सूर्य से । मैं भी इन्हें वैसे ही नहीं त्याग सकता जैसे यशस्वी पुरुष अपनी कीर्ति को नहीं त्याग सकता ।''

श्रीराम का ये कथन और भी अधिक स्पष्ट कर देता है कि सीता परित्याग की घटना पूर्णतया मिथ्या है।

भ्रान्ति 5 : क्या रावण वध 'विजयादशमी' को हुआ था?

ये भी एक बड़ा भ्रम है कि रावण का वध ''दशहरा'' के दिन हुआ था और दीपावली के दिन श्रीराम का राज्याभिषेक हुआ था। आश्चर्य तो ये है कि बिना सत्य को जाने समस्त देशवासी बड़ी धूमधाम से इन दोनों पर्वों को इसी भावना के साथ मनाते हैं। इन दोनों पर्वों का इस घटना से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है । जबकि रावण का वध चैत्र मास में हुआ था और श्रीराम द्वारा ऋषियों के आश्रम में विजयदशमी और दीपावली पर्व मनाने का संक्षिप्त उल्लेख वाल्मीकिय रामायण में मिलता है। इस सम्बन्ध में और भी प्रबल प्रमाण प्रस्तुत हैं :

''क्या रामायण काल्पनिक ग्रन्थ है'' इस शीर्षक में दो श्लोक प्रस्तुत किये गये हैं जिनके अनुसार कार्तिक/आश्विन कृष्ण प्रतिपदा को सीताजी की खोज प्रारम्भ हुई थी, जबकि दशहरा आश्विन शुक्ल दशमी को आता है । अर्थात् विजयदशमी के बीत जाने के पश्चात् सीताजी की खोज प्रारम्भ हुई थी । इसलिए यह तो प्रश्न ही नहीं उठता कि रावण वध विजयदशमी को हुआ। दूसरा ये है कि श्रीराम का राज्याभिषेक 14 वर्ष पूर्ण होने के पश्चात् होना था । और श्रीराम राज्याभिषेक की घोषणा के अगले ही दिन वन की ओर प्रस्थान कर गये ।

चैत्रः श्रीमानयं मासः पुण्यः पुष्पितकाननः ।
यौवराज्याय रामस्य सर्वमेवोपकल्प्यताम् ।। ''अयोध्याका0 3/4।।

अर्थात् इस श्रेष्ठ और पवित्र चैत्र मास में , जिसमें वन पुष्पों में सुशोभित हो रहे हैं, श्रीराम के राज्याभिषेक के लिए तैयारी कीजिए ।

अब यह स्पष्ट है कि श्रीराम का राज्याभिषेक चैत्र मास में होना था तथा चौदह वर्ष भी चैत्र में ही पूरे होने थे । इसलिए दीपावली पर राज्याभिषेक होना कैसे सम्भव हो सकता है ? अब महत्वपूर्ण प्रश्न ये है कि पुनः रावण वध कब हुआ ?

प्रस्तुत है कुछ प्रमाणः

इन्द्रजित् के वध के पश्चात् शोकाकुल रावण सीता को मारने को उद्यत हुआ तब उसे रोकते हुए सुपार्श्व ने कहा –

अभ्युत्थानं त्वमद्यैव कृष्णपक्षचर्तुदशीम् ।
कृत्वा निर्याह्यमावास्यां विजयाय बलैर्वृतः ।। –युद्ध0 50/19

आज कृष्णपक्ष की चतुर्दशी है । आज आप युद्ध की पूर्ण तैयारी कीजिए और कल अमावस्या को सेना को साथ ले विजय के लिए दुर्ग से बाहर निकलिए ।

युद्ध हुआ और रावण वध हुआ । रावण की अंत्येष्टि एवं विभीषण के राज्याभिषेक के पश्चात् जब विभीषण ने श्रीराम से कुछ दिन लंका में ही रूकने का आग्रह किया तो श्रीराम ने यह कहते हुए मना कर दिया कि ''भरत मेरी प्रतीक्षा में है। अब तो आप ऐसा प्रबन्ध कीजिए कि मैं शीघ्र ही अयोध्या पहुँच जाउँ ।'' इस पर विभीषण ने कहा –

अह्न त्वां प्रापयिष्यामि तां पुरी पार्थिवात्मज ।
पुष्पकं नाम भद्रं ते विमानं सूर्यसन्निभम् ।। – युद्ध0 67/7–8

हे राजकुमार ! आपका कल्याण हो । मैं आपको सूर्य की भाँति देदीप्यमान पुष्पक विमान द्वारा एक ही दिन में अयोध्या पहुँचा दूगा ।

और पुष्पक विमान में सवार में हो–

पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पंचम्यां लक्ष्मणाग्रजः ।
भरद्वाजाश्रमं प्राप्य ववन्दे नियतो मुनिम् ।। – युद्ध0 70/1

चौदह वर्ष पूर्ण हो जाने पर श्रीराम पंचमी को भरद्वाज ऋषि के आश्रम में पहुँचे और बैठे हुए ऋषि को प्रणाम किया । यहाँ पंचमी, कृष्ण चतुर्दशी आदि तिथियाँ दी गई हैं, परन्तु मास नहीं दिया गया है। इसका सीधा सा अर्थ है कि वर्ष के प्रथम मास की अर्थात् चैत्र मास की तिथियाँ हैं। इस सम्बन्ध में एक और प्रमाण है कि तुलसीकृत 'रामचरितमानस' के अन्त में श्रीराम के 14 वर्ष के वनवास का एक तिथिपत्र दिया गया है । वहाँ स्पष्ट लिखा है –

चैत्र शुक्ल चौदस जब आई । मरयो दशानन जग दुखदाई ।।
–रामचरित मानस, (पृष्ठ –1260, वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई सन् 1901)

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि रावण वध और श्रीराम का राज्याभिषेक चैत्र मास में ही हुआ था ।

भ्रान्ति : 6 : रामायण की रचना कब ?श्रीराम के जन्म के पश्चात् या पूर्व ?

यह भी एक बहुत बड़ा प्रपंच पाखण्डियों द्वारा रचा गया है कि रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने श्रीराम के जन्म से 10000 वर्ष पूर्व ही कर दी थी । परन्तु रामायण का यह श्लोक इस धारणा को भी स्पष्ट कर रहा है –

प्राप्तराज्यस्य रामस्य वाल्मीकिर्भगवानृषिः ।
चकार चरितं कृत्स्नं विचित्रपदमर्धवत् ।। बाल0 2/25।।

श्रीराम के राज्यसिंहासन पर आरूढ़ होने पर महर्षि वाल्मीकि ने विचित्र पदों से युक्त इस सम्पूर्ण काव्य की रचना की।

भ्रान्ति : 7: क्या रामायण जैसे महाकाव्य के रचनाकार महर्षि वाल्मीकि आरम्भ में डाकू थे?

यह एक और मिथ्या तथ्य प्रचारित किया गया है कि आरम्भ में महर्षि वाल्मीकि डाकू थे । इस बात का स्वयं उन्होंने खण्डन किया है –

''प्रचेतसोऽहं दशमः पुत्रो राघवनन्दन ।
मनसा कर्मणा वाचा भूतपूर्वं न किल्विषम् ।।''

हे राम! मैं प्रचेतस मुनि का दसवाँ पुत्र हूँ। मैंने मन, वचन और कर्म से कभी पापाचरण नहीं किया है।

गृध्रकूट देश के राजा जटायु के बड़े भाई सम्पाति दूरबीन का प्रयोग करते थे, जिसे ''दिव्य चक्षुबल'' कहा जाता था । यह सूर्य विद्या से निर्मित किया हुआ था । इसी का प्रयोग कर सम्पाति ने लंका में बैठी हुई सीताजी को देखकर वानरों को उनका पता बताया था ।

thearyasamaj.org

भ्रान्ति 8 : अहल्या उद्धार :

इस प्रकार श्रीराम के जीवन से सम्बन्धित अनेक मिथ्या धारणाएँ विदेशी इतिहासकारों, एवं स्वार्थी, पाखण्डी भारतीयों द्वारा प्रचलित करवायी गई। जिससे कि भारतीय जनमानस अपने आदर्श चरित्रों को भी हीन भावना से देखता रहे और विदेशियों का मानसिक गुलाम बना रहे। हमें आशा है कि इस लेख के माध्यम से पाठकों की अनेक मिथ्या धारणाओं का नाश होगा और वे श्रीराम के जीवन के विषय में जानकर गर्व का अनुभव करेंगे ।

इसकी सत्यता के विषय में आर्य मार्तण्ड के विगत अंकों में "वेदामृत" शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशिक किया जा चुका है वहाँ से जान लेवें।

– अनिल आर्य, जयपुर

ब्रह्मा आदि विद्वानों की परम्परा और भारत

भाग – 5 गतांक से आगे .....

ब्रह्मा की महत्ता में अथर्ववेद कहता है –

ब्रह्मज्येष्ठा संभृता वीर्याणि ब्रह्माग्रे ज्येष्ठं दिवमाततान।
भूतानां ब्रह्मा प्रथमो त जज्ञे तेनार्हति ब्रह्मणा स्पर्धितुं कः।।

यह मन्त्र यहाँ दो बार पढ़ा गया है 19.20.21 तथा 19.23.30 । प्रथम में ऋषि अंगिरा है तथा द्वितीय में ऋषि अथर्वा है। दोनों ऋषियों की समान मान्यता है। दोनों ही कहते हैं कि कोई भी ब्रह्मा के साथ स्पर्धा नहीं कर सकता है। मन्त्रार्थ है :

समस्त वीर्य ब्रह्मा की अनुगतता में ही सर्वत्र व्याप्त हैं, ब्रह्मा ने ही प्रथम ज्येष्ठ द्युलोक का प्रसार किया । भूतों में प्रथम जन्मा ब्रह्मा ही है। इस प्रकार के उस ब्रह्मा के साथ कौन स्पर्धा के योग्य हो सकता है।

इसी का व्याख्यात्मक अनुवाद वायुपुराण निम्नलिखित रूप में देता है –

यस्मादस्य परं वीर्यं परमायुः परं नवः ।
पराशक्तिः परोधर्यः परा विद्या परा धृतिः ।। 101.105।।
परं ब्रह्म परं ज्ञानं परमैश्नर्यमेव च।
तस्मात् परतरं भूतं ब्रह्मणोऽन्यं न विद्यते ।। 106 ।।
परेस्थितोह्येष परः सर्वार्थेषु तलः परः ।
संख्यातस्तु परो ब्रह्मा तस्यार्धं तु परार्धता ।। 107 ।।

चूँकि इस ब्रह्मा का वीर्य 'पर' है, आयु 'पर' है, तप 'पर' है, शक्ति 'पर' है, धर्म 'पर' है, विद्या 'पर' है।

यहाँ बारम्बार 'पर' शब्द का प्रयोग है, 'पर' का अर्थ है परे अर्थात् बढ़कर अथवा उपर होना है जिसका अभिप्राय बढ़कर अथवा उत्कृष्ट होना है। ब्रह्मा का वीर्य 'पर' है, सबसे बढ़कर है, सबसे परे है अथवा सबसे उत्कृष्ट है। इसी भाँति इसकी आयु 'पर' है, तप 'पर' है, शक्ति 'पर' है, धर्म 'पर' है, विद्या 'पर' है, धृति 'पर है। ब्रह्म (निरन्तर विकास प्रक्रिया अथवा वर्धनशीलता) पर है, ज्ञान 'पर' है, ऐश्वर्य (ईश्वरभाव अर्थात् शासनशक्ति)'पर' है, इससे स्पष्ट है कि ब्रह्म से कोई अभिव्यक्ति नहीं है। (105.106) । यह ब्रह्मा सबसे परे है, अक्षः परमेष्ठी हैः यह सभी अर्थों से परे है। इस कारण से ब्रह्मा को 'पर' कहा गया है। उसका आधा परार्द्ध है, यही परार्द्ध की परार्द्धना है। ब्रह्मा की आयु 'पर' है, और 100 वर्ष की है तो निश्चित ही वह 100 वर्ष ब्रह्मा के अपने काल के मान से हैं। ब्रह्मा की आयु का आधा भाग (परार्द्ध) बीत चुका है, अब ब्रह्मा उत्तर परार्द्ध में हैं। 50 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर 51वें वर्ष के प्रथम दिवस में हैं, अपने काल के मान के अनुसार इनके दिवस को 'कल्प' नाम दिया गया है।

हमारे इसी प्रकार के कृत्यों में बोले जाने वाले संकल्प वाक्य में **"ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे"** कहा जाता है, वह वर्तमान ब्रह्मा की आयु को बता रहा है कि **"इनके द्वितीय परार्द्ध में प्रथम दिवस में"** । इस कल्प के 14 विभाग 14 मनु हैं, 6 मनुओं के व्यतीत हो जाने पर सातवें मन्वन्तर में विद्यमान हम इस मनु के 27 युग पूरे करके 28वें युग के तीन पादों के पँर्ण होने पर कलि नाम के चतुर्थ युग में चल रहे हैं। इस युग को हम अपने व्यवहार के संवतों– विक्रम, श्शालिवाहन, शक तथा इस्वीय सन् के साथ सम्बन्ध कर अपने संकल्प दिन के साथ सृष्टि वर्षों का ब्रह्मा के दिवस (कल्प) के वर्षों का तथा स्वयं ब्रह्मा के कालिक महत्व का ज्ञान हो जाता है। हमारे समस्त शास्त्रों का प्रथम प्रवक्तृत्व भी ब्रह्मा का है, विश्व की व्यवस्था –शासन आदि के सूत्रधार भी ब्रह्मा हैं। इस प्रकार 'ब्रह्मा की स्पर्धा करने वाला कोई नहीं है" यह ज्ञान स्पष्ट हो जाता है।

क्रमशः.....

– प्रो. अनन्त शर्मा , अध्यक्ष, साहित्य–संस्कृति पीठ, राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर ।

आर्य समाज गंगापुर सिटी द्वारा दो दिवसीय होली स्नेह मिलन समारोह का आयोजन

आर्य समाज एवं आर्य वीर दल, गंगापुर सिटी द्वारा होलिका पर्व के उपलक्ष्य में दो दिवसीय होली स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 5 मार्च, 2015 को नवसस्येष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया । सायं 4 बजे से आर्य समाज भवन में शुरू हुए इस आयोजन में विशेष मंत्रों से आहुति डाली गई । पश्चात् नये अन्न को यज्ञाग्नि में सेककर प्रसाद के रूप में वितरित किया गया । कार्यक्रम में यज्ञ के पश्चात् महिलाओं द्वारा भजनों की प्रस्तुति दी गई साथ ही होली के महत्व पर चर्चा की गई ।

दूसरे दिन 6 मार्च को आर्य वीर दल की कल्याण जी मन्दिर स्थित मुख्य शाखा प्रांगण से प्रातः 8.00 बजे से शोभायात्रा नगर के मुख्य मार्गों से निकाली गई जिसमें आर्य वीरों, आर्य परिवारों सहित नगर के गणमान्य नागरिकों ने भी भाग लिया । यह आयोजन आर्य समाज एवं आर्य वीर दल, गंगापुर सिटी द्वारा लगभग 2 दशकों से निरन्तर प्रतिवर्ष आयोजित किया जा रहा है।

वाल्मीकिय रामायण सम्भवतया प्रथम ऐसा ऐतिहासिक काव्य है, जिसकी रचना 32 अक्षरों वाले "अनुष्टुप छन्द" में हुई थी ।

thearyasamaj.org

।। ओ३म् ।।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का वार्षिक चित्र

इस प्रपत्र में पूर्ण विवरण अवश्य भेजें

1 अप्रैल..... से 31 मार्च..... तक का विवरण एवं 1 अप्रैल..... से 31 मार्च..... तक का विवरण

आर्य समाज.....जिला.....का वार्षिक वृत्तान्त

आय का विवरण	रू. पै.	व्यय का विवरण	रू. पै.
सभासदों का चंदा दान मकान किराया विवाह संस्कारों से आय वार्षिकोत्सव से बचत अन्य आय		साप्ताहिक सत्संग में खर्च अतिथि सत्कार सभा को निश्चित कोटि सभा को दशांश वेद प्रचार आर्य मार्तण्ड दयानंद सेवा सदन वार्षिक उत्सव विशेष प्रचार आदि	
योग		योग	

1. वर्ष के आरम्भ में सभासदों की संख्या
   वर्ष के अंत में आर्य सभासदों की संख्या
   आर्यों (सहायकों) की संख्या रही।
2. वार्षिक निर्वाचन दिनांक को हुआ।
3. अंतरंग साधारण सभा बार हुई।
4. वार्षिकोत्सव दिनांक को हुआ।
5. सभा को दी गई राशि की
   रसीद सं. दि. है।
   (1.) निश्चित कोटि (2.) दशांश
   (3.) आर्य मार्तण्ड (4.) अन्य

6. उपर्युक्त आय पर..... दशांश की राशि.....बनती है।
   दशांश निश्चित कोटि आर्य मार्तण्ड का कुल योग.....होता है।
7. आर्य समाज के अधीन निम्नरथ संस्थायें है। (यहाँ केवल नाम ही लिखे, ब्यौरा पृथक संलग्न करे)
8. इस समाज की साधारण सभा दिनांक ..... द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए निम्नस्थ प्रतिनिधि चुने गये।

क्र.स.	प्रतिनिधि का नाम	पिता का नाम	आयु	शतांश चन्दा	हस्ताक्षर प्रतिनिधि
1.					
2.					
3.					
4.					

प्रमाणित किया जाता है कि उपयुक्त प्रतिनिधियों की अधिवेशनों में उपस्थिति नियमानुकूल है तथा इनकी आय का शताशं चन्दा पूरे वर्ष का प्राप्त हो चुका है। सभा के अधिवेशन में वे ही प्रतिनिधि भाग ले सकेंगे जिनके आय का शतांश चन्दा उपर्युक्त वार्षिक चित्र में अंकित होगा।

दिनांक ..... ह. प्रधान ह. मंत्री ह. कोषाध्यक्ष ह. ऑडीटर

आर्य समाज के आर्य सभासदों की सूची जिनका गत वर्ष का पूरा चन्दा जमा हो चुका है और साप्ताहिक अधिवेशन में 25% उपस्थिति है। वे दो वर्ष से अधिक समय से सदाचार पूर्वक आर्य समाज के सदस्य हैं।

क्र.स.	नाम	पिता का नाम	पुत्र/पुत्री	आयु	मासिक आय चन्दा	साप्ताहिक अधिवेशन में उपस्थिति	विशेष

ह. मंत्री आर्य समाज

रामायण में अनेकत्र ऐसे प्रमाण हैं जिनके माध्यम से जटायु, वानरों एवं राक्षसों के पास बहुतायत में "मोनो प्लेन्स" भी हुआ करते थे , जिनमें एक या दो व्यक्ति बैठकर आकाश मार्ग से गमन किया करते थे।

thearyasamaj.org

आर्य वीरांगना दल, राजस्थान का शपथ ग्रहण समारोह

श्रीमती दुर्गा शर्मा आर्य वीरांगना दल की संचालिका नियुक्त
आर्य वीर दल द्वारा मनाया गया नववर्ष

जयपुर ! 22मार्च ! भारतीय नवसंवत्सर के अवसर पर आर्य वीर दल, जयपुर द्वारा राजा पार्क स्थित आर्य प्रतिनिधि सभा भवन में ''यज्ञ एवं भजन संध्या'' का आयोजन किया गया । सायं 4 बजे से यज्ञ के साथ आरम्भ हुए समारोह में यज्ञ के पश्चात् श्रीमती दुर्गा शर्मा को आर्य वीरांगना दल, राजस्थान की प्रान्तीय संचालिका के पद पर नियुक्ति की घोषणा की गई । इस अवसर पर आर्य वीर दल, राजस्थान प्रान्त के कार्यकारी संचालक आचार्य देवेन्द्र शास्त्री द्वारा नवनियुक्त संचालिका को नियुक्ति पत्र एवं नियुक्ति चिह्न प्रदान किए । हरिद्वार से पधारे हुए युवा संन्यासी स्वामी धर्मानन्द जी महाराज द्वारा श्रीमती शर्मा को शपथ ग्रहण करवायी गयी। इस अवसर पर बोलते हुए श्रीमती शर्मा ने संगठन की प्रचार–प्रसार हेतु सम्पूर्ण राजस्थान में सघन अभियान चलाये जाने की बात कही ।

समारोह में शपथ ग्रहण के पश्चात् दीपक शास्त्री, जवाहर लाल जी वधवा, श्रुति आर्य, रवीना तनवानी आदि ने संगीत की धुनों पर मधुर भजनों की लम्बी श्रृंखला प्रस्तुत कर भजन संध्या के वातावरण को भक्तिमय बना दिया। अन्त में शान्तिपाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया ।

समारोह के अध्यक्ष आचार्य देवेन्द्र शास्त्री तथा मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के मंत्री डॉ. सुधीर शर्मा रहे।

आर्य वीरांगना दल राजस्थान का प्रांतस्तरीय आवासीय "योग व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र-निर्माण शिविर"

मई अथवा जून माह में आयोजित किया जाना निश्चित हुआ है। जिसकी तिथि, समय आदि विस्तृत कार्यक्रम शीघ्र ही घोषित कर दिया जायेगा। – श्रीमती दुर्गा शर्मा, प्रांतीय संचालिका

आर्य वीर दल, राजस्थान का प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर मई में

सार्वदेशिक आर्य वीर दल की राजस्थान प्रान्तीय इकाई का प्रान्तस्तरीय आवासीय **योग –व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर** 17 – 23 मई, 2015 को ऋषि उद्यान, अजमेर में होना तय किया गया है। इस शिविर में समूचे प्रान्त से चयनित सैंकड़ों बालक, किशोर, युवा आदि भाग लेंगे ,जिन्हें 7 दिनों तक पूर्णरूपेण गुरूकुलीय दिनचर्या में रखकर योग, व्यायाम, यज्ञ, स्वास्थ्य, व्यवहार, संस्कृति, अस्त्र–शस्त्र, मार्शल आर्ट, तकनीकी, विज्ञान, वेद, अध्यात्म आदि अनेक प्रकार की विधाओं को सुयोग्य शिक्षकों द्वारा सघन प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा शिविर की समाप्ति पर सभी सफल प्रशिक्षुओं को प्रमाण–पत्र भी प्रदान किये जाएंगे जो कि उनके लिए भविष्य में अनेकत्र उपयोगी सिद्ध होते हैं।

शिविर में न्यूनतम 14 वर्ष की आयु एवं स्वस्थ शरीर वाले ही भाग ले सकते हैं ।

अतः जो भी आर्य जन अपने बच्चों को इस शिविर में प्रशिक्षण हेतु, चरित्र–निर्माण हेतु भेजने के इच्छुक हों ,अथवा इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त हेतु संगठन के अपने – अपने जिले के प्रतिनिधियों से सम्पर्क करें अथवा प्रान्तीय मंत्री श्री भवदेव जी शास्त्री से 9001434484 पर सम्पर्क कर सकते हैं ।

महर्षि दयानन्द ने दिलवाया महिलाओं को समानता का अधिकार

कोटा ! जिले की समस्त आर्य समाजों के द्वारा संयुक्त रूप से आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा में 8 मार्च को महिला दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें वक्तव्य देते हुए अग्निमित्र जी शास्त्री ने कहा कि आधुनिक युग में महिलाओं को समानता का अधिकार दिलाने का कार्य महर्षि दयानन्द ने किया । उन्होंने कहा कि वेदों में महिला और पुरूष दोनों को समान अधिकार दिये गये हैं । वैदिक काल में यह व्यवस्था पूर्णतया प्रचलन में थी । कार्यक्रम में श्रीमती सुमनबाला सक्सेना, श्रीमती मालती शर्मा, श्रीमती मानकंवर बलदुआ आदि ने भजनों की प्रस्तुति दी । डॉ. के.एल. दिवाकर ने महिलाओं की भूमिका पर अपनी कविता प्रस्तुत की। जैसा कि मंत्री राकेश चड्डा ने बताया कि कार्यक्रम में पं. वृद्धिचन्द शास्त्री, श्री अर्जुनदेव चढ्डा आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए । इस अवसर विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी कार्य कर रही 43 महिलाओं का आर्य समाज द्वारा सम्मान भी किया गया । अन्त में शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

रामायण में वर्णित पुष्पक विमान की एक अद्भुत विशेषता थी कि "वह विधवा स्त्री को नहीं बैठाता था" अर्थात् विधवा स्त्री के बैठे होने पर वह उड़ान नहीं भरता था ।

thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-221 / 2014-2016 / आर. एन. आई नं.10471/60

कार्यालय सूचना एवं निर्देश

अत्यावश्यक सूचना :

- आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का निर्वाचन आगामी जून माह में प्रस्तावित है । इसके लिए सभा से सम्बद्ध कुछ आर्य समाज अपना वार्षिक मानचित्र निर्धारित समय सीमा तक किसी कारणवश नहीं भेज पायें हैं । उन सभी आर्य समाजों के मंत्री तथा प्रधानों को सूचित किया जाता है कि वे समस्त आर्य समाजें अपना शेष अवधि (दो या एक वर्ष) का दशांश, निश्चित कोटि तथा आर्य मार्तण्ड शुल्क 30 अप्रैल, 2015 तक सभा को निर्धारित प्रपत्र में भरकर आवश्यक रूप से प्रेषित कर देवें। प्रतिवेदन प्रपत्र हेतु एवं विस्तृत जानकारी प्राप्त करने हेतु सभा कार्यालय 0141–2621879 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

सामान्य सूचना :

- आर्य मार्तण्ड के नववर्ष से प्रकाशित होने वाले अंकों में "शंका समाधान" का एक नया कॉलम शुरू किया जाने का प्रस्ताव है, जिसमें पाठकों के द्वारा किसी भी विषय से सम्बन्धित शंकाएं की जा सकेंगी जिनका कि आर्य विद्वानों के द्वारा समाधान करवाया जायेगा । अतः सभी से निवेदन है कि जो भी विद्वान् इस कार्य में जुड़कर सहयोग करना चाहें, वे अपना नाम, पता, सम्पर्क, विशेषज्ञता आदि की जानकारी हमें aryamartand@gmail.com पर भेज सकते हैं। **वैदिक विचारधारा को और भी अधिक व्यापक बनाने का यह एक श्रेष्ठ माध्यम बन सकता है।**
- सभी आर्य समाजों, जिला आर्य प्रतिनिधि इकाईयों, आर्य महानुभावों से निवेदन है कि "आर्य मार्तण्ड" में समस्त राजस्थान का प्रतिनिधित्व हो सके, इसके लिए पत्र द्वारा स्वतन्त्र पत्रकारिता में रूचि रखने वाले आर्य महानुभावों को पत्र से जुड़ने का एक सुनहरा अवसर प्रदान किया जा रहा है। जो कोई भी अपने क्षेत्र में रहकर आर्य मार्तण्ड के लिए पत्रकारिता कर सेवा करने के इच्छुक हों, वे अपनी सम्पूर्ण जानकारी, फोटो के साथ aryamaratnad@gmail.com पर मेल कर सकते हैं।

प्रतिक्रिया

आदरणीय सम्पादक जी !

आर्य मार्तण्ड में हो रहे परिवर्तन और नवीनताएँ उत्साहवर्द्धक और प्रसन्नता की अनुभूति करवा रही हैं। "**वेदामृत**" शीर्षक से प्रकाशित हो रहे पौराणिक आख्यानों का वास्तविक एवं वैदिक स्वरूप अत्यधिक प्रभावशाली है और यह दर्शाने में समर्थ है कि महर्षि दयानन्द ने इतने अल्प समय में कितनी अधिक गहराई में जाकर अद्भुत, प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण विषयों को प्रस्तुत किया है जिससे जनसाधारण भ्रान्तियों, पाखण्डों से मुक्त हो विशुद्ध वैदिक परम्परा का अंग बन सके। मार्च–द्वितीय अंक में नवसंवत्सर के उपलक्ष्य में " भारतीय कालगणना के दैनिक प्रयोग की विधि" **शीर्षक से प्रकाशित श्री अनिल आर्य का लेख** प्रशंसनीय, है और वास्तव में सभी भारतीयों द्वारा स्वीकार्य होना भी चाहिए ।

लेखक उक्त लेख में तिथि प्रयोग सम्बन्धी अन्य उदाहरणों को समायोजित करते तो लेख सुधी पाठकों के लिए ज्यादा ग्राह्य एवं उपयोगी हो सकता था। यथाः किसी मास में दो तिथियों का एवं साथ होना, किसी मास में एक तिथि दो बार प्रयुक्त हो, कभी कभी कालगणना में अधिमास की स्थिति भी होती है। लेखक यदि "अंकानां वामतो गति"के सिद्धान्त को स्पष्ट करते जनमानस अधिक लाभान्वित होता। सद्प्रयोगों के लिए अनेकः शुभकामनाएँ।

– प्रो. स्नेहलता शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर ।

आगामी कार्यक्रम

- 11 व 12 अप्रैल, 2015 को ऋषि उद्यान, अजमेर में आर्य वीर दल, राजस्थान के पदाधिकारियों एवं प्रमुख कार्यकर्ताओं का दो दिवसीय आवासीय चिन्तन शिविर एवं विचार गोष्ठी ।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित। मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर शर्मा, मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषित

प्रेषकः-
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

यूको बैंक A/c No.:18830100010430 तिलक नगर, जयपुर

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।